International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

समाज में मूल्यों का संगठन और संरचना

डॉ. मीनाक्षी मीना

सहायक. अचार्य समाजशास्त्र राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजगढ़ (अलवर)

सारांश

सामाजिक संबंधों को दिशा प्रदान करते हैं। यह शोध–पत्र समाज में मूल्यों के संगठन (व्तहंदप्रंजपवद) और संरचना ;जतनबजनतम) का विश्लेषण करता है। इसमें यह बताया गया है कि किस प्रकार मूल्य समाज के विभिन्न स्तरोंकृ व्यक्ति, समूह और संस्थाओं–में व्यवस्थित होते हैं तथा सामाजिक स्थिरता और परिवर्तन में भूमिका निभाते हैं।

यह सच है कि समाज में आज हम एक औद्योगिक एवं भौतिकवादी संस्कृति में जीवन व्यतीत कर रहे हैं जिससे मनुष्य भावनाहीन होकर तार्किक आधार पर और लाभ–हानि की कसौटी पर ही सभी प्रकार के व्यवहार करता है। इस प्रकार कहा जा सकता है आज हम व्यक्तिवादिता एवं प्रतियोगिता वाले समाज में रह रहे हैं। लेकिन इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरणों की कमी नहीं रही है कि जब व्यक्ति ने उन सिद्धान्तों और विचारों को बनाये रखने के लिए अपने जीवन का बलिदान कर दिया जिन्हें समाज में महत्वपूर्ण समझा जाता रहा है। राम ने पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए स्वेच्छा से चौदह वर्ष का वनवास स्वीकार कर लिया। गौतम बुद्ध ने केवल सत्य की खोज करने लिए सम्पूर्ण राज्य का परित्याग कर दिया जबकि स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान सैकड़ों क्रांतिकारियों ने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने जीवन की आहुति दे दी। इसके अतिरिक्त सामान्य जीवन में भी ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो कुछ विशेष मूल्यों के लिए जीवित रहते हैं तथा इन मूल्यों को बनाये रखने के लिए बड़ी से बड़ी हानि उठाने को भी सहन करने लिए तत्पर रहते हैं। प्राकृतिक आपदा जैसी घटनाक्रम में जैसा कि कोरोना वायरस ;ब्वअपक.19द्ध के समय व्यक्ति अन्य व्यक्तियों की सेवा करने में जुट गये यह भी एक प्रकार मूल्य की ही भावना है। इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक समाज के अपने कुछ लक्ष्य, आदर्श तथा मानदण्ड होते हैं जिनके आधार पर व्यक्ति विभिन्न घटनाओं और व्यवहारों का मूल्यांकन करता है। इस दृष्टिकोण से मूल्य एक तरह के समाजिक मानदण्ड हैं जो हमारे लिए एक विशेष अर्थ रखते हैं और जिन्हें हम सामाजिक जिवन के लिए महत्वपूर्ण समझते हैं। यही मूल्य इस बात का निर्धारण करते हैं कि व्यक्ति के लिए कौन–सा व्यवहार नैतिक है और कौन–सा अनैतिक, क्या अच्छा है और क्या बुरा, पाप और पुण्य क्या है तथा समाज व्यक्ति से किस तरह के व्यवहारों की आशा करता है ? इस प्रकार कहा सकता है कि मूल्य समाज की आत्मा है अर्थात समाज मूल्यों का संगठन है। मूल्य के अभाव में समाज जीवित नहीं रह सकता, जिस प्रकार यदि शरीर में से आत्मा को निकाल दिया जाता है तो शरीर मर जाता है उसी प्रकार यदि समाज में से सामाजिक मूल्य को निकाल दिया जाए तो समाज का अस्तित्व खत्म हो जायेगा।

मुख्य शब्द – लक्ष्य, आदर्श नियम, मानदण्ड, आत्मिक स्वीकृति, सार्वभौमिक, सामूहिक प्रतिनिधित्व, प्रतीकात्मक भावना

प्रस्तावना –

सामाजिक मूल्यों की प्रकृति को समझने के लिए यह ध्यान रखना आवश्यक है कि यह सामाजिक आदर्श नियमों अथवा प्रतिमानों से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित होते हुए भी उनसे भिन्न होते हैं। इसके बाद भी सामाजिक प्रतिमान तथा सामाजिक मूल्य के बीच पाया जाना अन्तर बहुत सीमान्त है। समाज के जिन आदर्शों अथवा व्यवहार के ढंगों को समूह–कल्याण के लिए बहुत महत्वपूर्ण समझा जाता है, उन्हें सामाजिक प्रतिमान कहते हैं। दूसरी ओर, सामाजिक मूल्य मानव–स्वभाव से ही निहित होते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि जिन आदर्श नियमों को व्यक्ति अपने अन्तःकरण से स्वीकार कर लेते हैं तथा जो मानव विश्वास का अंग बन जाते हैं, उन्हें हम सामाजिक मूल्य कहते हैं। एक बार

जब कोई धारणा, विश्वास, विचार अथवा व्यवहार का ढंग एक मूल्य का रूप ले लेता है तब उस समाज के लोग उसकी रक्षा के लिए सब कुछ त्यागने को भी तत्पर हो जाते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक समाज के अपने कुछ विशेष मूल्य होते हैं जिनका उस समाज के सदस्यों के लिए एक विशेष महत्त्व होता है।

प्रत्येक समाज में व्यक्ति अपनी विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अन्तःक्रिया ही नहीं करते बल्कि इस बात का भी ध्यान रखते हैं कि उनकी आवश्यकताएँ किन साधनों के द्वारा पूरी हुई और उनके प्रति समाज का दृष्टिकोण क्या है ? इसका तात्पर्य यह है कि उद्देश्य तथा आदर्श दोनों ही मानव–व्यवहारों को प्रभावित करते हैं। यह भी सच है कि प्रत्येक मनुष्य अपने भरण–पोषण सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने अपनी सामाजिक परिस्थितियों से अनुकूल करने तथा सामाजिक जीवन में भागीदार बनने के लिए विभिन्न आचरण करता है। इन व्यवहारों के लिए व्यक्ति को यदि स्वतंत्र छोड़ दिया जाए तो समाज में अत्यधिक असुरक्षा और अव्यवस्था उत्पन्न हो जायेगी। इस स्थिति का समाधान करने के लिए समाज में कुछ ऐसे मान्यता प्राप्त लक्ष्य अथवा मानदण्ड विकसित किये जाते हैं जो व्यक्ति के सामने समूह की इच्छा को स्पष्ट करते हैं। व्यक्ति समाजीकरण की प्रक्रिया के दौरान इन लक्ष्यों और मानदाण्डों का अपने व्यक्तित्व में अन्तरीकरण कर लेता है। स्पष्ट है कि एक विशेष विचार अथवा व्यवहार का ढंग पहले स्तर में समूह के उद्देश्य के रूप में स्पष्ट होता है। इनमें से जो उद्देश्य अथवा लक्ष्य अधिक महत्वपूर्ण प्रमाणित होते हैं वे आदर्श का रूप ले लेते हैं। जिन आदर्शों का सामूहिक कल्याण के लिए प्राथमिक मान लिया जाता है, वे सामाजिक प्रतिमान के रूप में बदल जाते हैं। इनमें जो सामाजिक प्रतिमान मनुष्य के विश्वास का अंग बन जाते हैं तथा जिन्हें अन्तःकरण से स्वीकार किया जाने लगता है, उन्हीं को हम सामाजिक मूल्य कहते हैं।

उद्देश्य –

1. मूल्य समाज में एकता एवं संगठन को बनाये रखता है।
2. मूल्य सामाजिक व्यवस्था एवं संतुलन को बनाये रखते हैं।
3. मूल्य सम्पूर्ण समाज में किये जाने वाले व्यवहारों का निर्देशन करने का काम करता है।
4. मूल्य समाज में अभौतिक संस्कृति, आदर्श–विचारों एवं व्यवहारों के प्रतीक का कार्य करता है।
5. सामाजिक नियंत्रण का एक महत्वपूर्ण साधन के रूप कार्य करना।
6. मूल्य समाज में अनुरूपता एवं विपथगमन को स्पष्ट करने का काम करता है।

सामाजिक मूल्य की अवधारणा –

सामाजिक मूल्य समाजशास्त्र की एक महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं में एक है। सामाजिक मूल्य समाज की आत्मा होती है। सामाजिक मूल्य के अभाव में हम किसी भी समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। सामाजिक मूल्य समाज के लिए उतना ही आवश्यक जितना की मानव के लिए उसकी आत्मा। सामाजिक मूल्य को एक ऐसे पैमाने या मानक के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसके आधार पर हम किसी व्यवहार, वस्तु, भावना, लक्ष्य एवं साधन को उचित एवं अनुचित, अच्छी या बुरी तथा सही या गलत ठहराते हैं। इस प्रकार सामाजिक मूल्य समाज के मानक हैं। समाजिक मानदण्डों का मूल्यांकन भी मूल्यों के आधार पर किया जाता है। सामाजिक मूल्य प्रत्येक समाज में पाये जाते हैं। प्रत्येक समाज के मूल्य पृथक–पृथक होते हैं। सामाजिक मूल्य समाज की ही उपज है। अतः समाज के सदस्य उनके प्रति जागरूक होते हैं, उनके अनुरूप व्यवहार करते हैं और उनके विपरित आचरण करने वालों की निन्दा एवं आलोचना की जाती है। सामाजिक मूल्य का सम्बन्ध किसी एक व्यक्ति विशेष से नहीं अपितु सम्पूर्ण समाज से है, इसलिए कहा जाता है कि समाज मूल्यों का संगठन मात्र है।

सामाजिक मूल्य हमारे विभिन्न प्रकार के व्यवहारों को प्रभावित करता है। मूल्य व्यक्ति के व्यक्तित्व और सामाजिक व्यवस्था के साथ बहुत गहराई से जुड़ा होता है। सामाजिक मूल्यों की पालना विभिन्न सामाजिक मानदण्डों से की जाती है। इस प्रकार सामाजिक मूल्य साध्य अथवा लक्ष्य है जिनकी पूर्ति सामाजिक मानदण्डों रूपी साधनों से की जाती है। समाजशास्त्र में मूल्य एक प्रकार का मानदण्ड है, पर साधारण मानदण्ड को ही हम मूल्य नहीं कहते हैं। जो

उच्च कोटि के मानदण्ड होते हैं उसे ही जॉनसन ने मूल्य कहा है। **जॉनसन** के शब्दों में भटंसनमे ंतम हमदमतंस `जंदकंतके ंदक उंल इम तमहंतकमक`ीपहीमत वतकमत **राधा कमल मुकर्जी** के अनुसार ''मूल्य समाज द्वारा मान्यता प्राप्त इच्छाएँ तथा लक्ष्य है, जिनका आन्तरीकरण सीखने या समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से होता है और प्राकृतिक अधिमान्यताएँ, मानक तथा अभिलाषएँ बन जाती है।'' **लेस्ली** ने कहा है भ। अंसनम पे जीम हतवनच बवदबमचजपवद वि जीम तमसंजपअम कमेपतंइपसपजल वि जीपदह वि पकमंण **फिचर** के अनुसार ''समाजशास्त्रीय दृष्टि से मूल्यों को उन कसौटियों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है , जिनके द्वारा वह समूह या समाज व्यक्तियों, प्रतिमानों, उद्देश्यों और अन्य सामाजिक–सांस्कृतिक वस्तुओं के महत्त्व का निर्णय करते हैं।'' इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि विभिन्न समाजों के मूल्य ही अपने सदस्यों के व्यवहारों को संचालित करते हैं। मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष से सम्बन्धित कुछ न कुछ मूल्य सभी समाजों में विद्यमान होते हैं। उदाहरण के लिए परिवार, विवाह, धर्म, राजनीति, आर्थिक जीवन तथा सामाजिक सम्पर्क आदि क्षेत्रों में विभिन्न मूल्य ही इस बात का निर्धारण करते हैं कि व्यक्ति को एक विशेष घटना अथवा क्रिया को किस रूप में देखना चाहिए तथा सामाजिक अन्तर्क्रिया करते समय उसका वास्तविक लक्ष्य और दृष्टिकोण क्या हो। इस आधार पर मूल्यों में ज्ञानात्मक तत्व का भी समावेश होता है।

मूल्यों की विशेषताएँ

1. **सामाजिक मूल्य सामूहिक होते हैं–** सामाजिक मूल्य की प्रकृति सामूहिक होती है। मूल्यों का सम्बन्ध किसी व्यक्ति विशेष से नहीं होता है, वरन् सम्पूर्ण समूह एवं समाज की धरोवर होते हैं। सामाजिक मूल्यों को समूह एवं समाज की मान्यता प्राप्त होती है। इनका निर्माण किसी एक व्यक्ति द्वारा नहीं किया जाता, वरन् सामूहिक अन्तःक्रिया के परिणामस्वरूप उत्पन्न होते हैं।
2. **सामाजिक मूल्य सामाजिक मानक होते हैं –** मानक का तात्पर्य है कि जिसके द्वारा हम किसी वस्तु को किसी यंत्र से मापते हैं, ठीक उसी प्रकार से सामाजिक मूल्य समाज को मापने का एक यंत्र है। सामाजिक मूल्य भी सामाजिक मानक होते हैं, जिनके द्वारा हम समाज के किसी व्यवहार, क्रिया आदि को मापा जा सकता है।
3. **मान्यता प्राप्त लक्ष्य– आर.के. मुकर्जी** के अनुसार मूल्य वे तथ्य है जो समाज द्वारा मान्यता प्राप्त लक्ष्यों तथा इच्छाओं को स्पष्ट करते हैं। वास्तव में सामाजिक मानदण्डों का सम्बन्ध व्यवहार के उन तरीकों से होता है जिनकी समाज हमसे प्रत्यासा रखता है, लेकिन मूल्य उन सामाजिक लक्ष्यों को स्पष्ट करते हैं जिसके अनुसार समाज के सदस्यों से अपने व्यक्तित्व को ढालने की आशा की जाती है। यहीं कारण है कि मूल्यों को प्रभावशाली बनाने के लिए इन्हीं के अनुरूप व्यवहार करते हैं और उन्हें समाज में विशेष मान्यता का दर्जा दिया जाता है।
4. **आत्मिक स्वीकृति –** मूल्यों की एक प्रमुख विशेषता यह है कि वैयक्तिक स्तर पर इनकी स्वीकृति का कोई पूर्व–निर्धारित ढाँचा नहीं होता है। व्यक्ति अपने समाज के मूल्यों का अपने व्यक्तित्व में जितना अधिक आन्तरीकरण कर लेता है, उसे सामाजिक और सांस्कृतिक आधार पर उतना ही नैतिक प्राणी माना जाने लगता है। मूल्यों का आन्तरीकरण करने के लिए व्यक्ति को न तो बाध्य किया जा सकता है और न ही उस पर संस्थागत दबाव डाला जाता है। एक समाज के सदस्य स्वयं आत्मिक रूप से अपने मूल्यों को स्वीकार करते हैं तथा व्यक्तिगत कर्तत्व के रूप में उनका पालन करते हैं।
5. **निरपेक्ष एवं सार्वभौमिक –** एक समाज विशेष के लिए मूल्य निरपेक्ष प्रकृति के होते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि मूल्य ही जीवन में विभन्न क्षेत्रों में विभिन्न लक्ष्यों का निर्धारण करते हैं। मूल्य ही यह निश्चित करते हैं कि समूह में सामाजिक प्रगति की प्रकृति कैसी एवं क्या होगी, किस तरह के सम्बन्धों और संस्थाओं को सामाजिक प्रगति का मानदण्ड माना जायेगा तथा व्यक्तिगत अन्तःक्रियाओं का रूप कैसा होगा ? प्रत्येक समाज में मूल्यों की भूमिका होती है, इसलिए इसकी प्रकृति में सार्वभौमिकता गुण पाया जाता है।
6. **सामाजिक मूल्य गतिशील होते हैं –** मूल्य एक स्थिर तथ्य नहीं है बल्कि समय की आवश्यकता के अनुसार इनमें गतिशीलता अथवा परिवर्तनशीलता का गुण भी देखने को मिलता है। वास्तविकता यह है कि मूल्यों की उत्पत्ति सामाजिक दशाओं में होती है। इन सामाजिक–सांस्कृतिक दशाओं में जब भी परिवर्तन होता है तो इसका थोड़–बहुत

प्रभाव मूल्यों पर भी पड़ता है। उदाहरण के लिए, कुछ समय पहले तक हमारे समाज में अन्तर्विवाह एक शक्तिशाली मूल्य था लेकिन आज जाति संरचना के घटते हुए प्रभाव के कारण अब इसे एक सार्वभौमिक मूल्य के रूप में नहीं देखा जा सकता। इसी प्रकार स्त्रियों की स्वतंत्रता तथा पुरूषों के अधिकारों से सम्बन्धित परम्परागत मूल्यों में भी एक स्पष्ट परिवर्तन दिखाई देने लगा है। जिस समाज के मूल्यों में बदलती हुई दशाओं के अनुसार गतिशीलता का गुण जितना अधिक पाया जाता है, उस समाज में प्रगति की दर उतनी ही अधिक तेज होती है।

7. **प्रतीकों द्वारा अभिव्यक्ति** – समाज में एक बार जो मूल्य प्रतिष्ठित हो जाते हैं, उन्हें विभन्न प्राकर के प्रतीकों के रूप में व्यक्त किया जाता है। सच तो यह है कि एक दृष्टिकोण से सभी मानवीय सम्बन्ध प्रतीकात्मक ही होते हैं। इसी कारण विभिन्न प्रतीकों के द्वारा एक समाज के सदस्यों को मूल्यों का ज्ञान प्रदान किया जाता है तथा मूल्यों के पालन सम्बन्धी अनुभवों से उन्हें परिचित कराया जाता है। विभिन्न गाथाएँ प्रतीकात्मक रूप से मूल्यों के अर्थ तथा महत्त्व को स्पष्ट करती है। **डॉ. मुकर्जी ने लिखा है कि समाज मूल्यों का ही संगठन है।** इसका का तात्पर्य यह है कि जिन समाजों में विभिन्न प्रतीकों के द्वारा उनके मूल्यों को जितने अच्छे ढंग से अभिव्यक्त कर दिया जाता है, उन समाजों में उतने ही संगठित सम्बन्धें तथा संस्थाओं की सृष्टि होती है।
8. **प्रतिस्पर्द्धा** – एक समाज में अक्सर विभिन्न कालों में विकसित होने वाले मूल्य साथ–साथ क्रियाशील देखने को मिलते हैं। इसके फलस्वरूप एक ही विषय, जैसे– विवाह, सम्पत्ति, पारिवारिक अधिकार तथा बच्चों के प्रशिक्षण से सम्बन्धित विभिन्न मूल्यों के बीच कभी–कभी प्रतिस्पर्द्धा भी उत्पन्न हो जाती है। इस दशा में व्यक्ति अपने अनुभवों, शिक्षा तथा समकालीन नैतिकता के आधार पर उन मूल्यों को चुन लेता है जो अधिक उपयुक्त होते हैं। इससे मूल्यों में 'विवेकपूर्ण संशोधन की प्रक्रिया' को प्रोत्साहन मिलता है।
9. **संस्तरण** – डॉ. मुकर्जी के स्पष्ट किया है कि सभी मूल्य समान स्तर के नहीं होते बल्कि उनके बीच एक संस्तरण देखने को मिलता है। वास्तव में, विभिन्न मूल्यों के आधार पर इन्हें तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है – जैविक मूल्य, सामाजिक मूल्य तथा आध्यात्मिक मूल्य। **जैविक मूल्यों** का सम्बन्ध जीवन–निर्वाह, स्वास्थ्य, वैयक्तिक कुशलता तथा शारीरिक सुरक्षा से होता है। **सामाजिक मूल्य** व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति, सम्पत्ति तथा सामाजिक सम्बन्धों की प्रकृति से सम्बन्धित होते हैं। **आध्यात्मिक मूल्य** सत्य, पवित्रता, सौन्दर्य तथा अच्छी संगति के बारे में होते हैं। यह सच है कि इन तीनों श्रेणियों के मूल्य महत्त्वपूर्ण है लेकिन इनमें आध्यात्मिक मूल्यों का स्थान सबसे अधिक ऊँचा होता है क्योंकि यह जीवन के अन्तिम लक्ष्यों को स्पष्ट करते हैं। मूल्यों में दूसरा स्थान सामाजिक मूल्यों का तथा अन्तिम स्थान जैविक मूल्यों का होता है।

मूल्यों का वर्गीकरण

अनेक विद्वानों ने मूल्यों को अपने ढंग से अलग–अलग प्रकार से सामाजिक मूल्यों का वर्गीकरण किया है। **पेरी** के अनुसार मूल्यों को दो भागों में बांटा है– सकारात्मक मूल्य एवं नकारात्मक मूल्य। इसी प्रकार **स्प्रेंगर** ने मूल्यों को छः भागों में बांटा है– सैद्धान्तिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, राजनीतिक मूल्य, धार्मिक मूल्य एवं सामाजिक मूल्य। **सी.एम. केस** ने मूल्यों को चार भागों में भागों में वर्गीकृत किया है – सावयवी मूल्य, विशिष्ट मूल्य, सामाजिक मूल्य एवं सांस्कृति मूल्य। **प्रो. जे.पी. सिंह** ने मूल्यों के तीन प्रमुख प्रकार बताएं हैं – नैतिक मूल्य, बुद्धिसंगत/तार्किक मूल्य एवं सौन्दर्यपरक मूल्यों की चर्चा की गई है।

मूल्यों का महत्त्व

मानव की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सामाजिक मूल्यों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। मुकर्जी का मत है कि कोई समाज यदि अपने अस्तित्व को बनाएं रखना चाहता है तो उसे व्यक्तित्व के सर्वोच्च मूल्यों की नियमित रूप से पूर्ति करनी होगी। वास्तविकता यह है कि मूल्यों की प्रकृति सामूहिक होती है। **दुर्खीम** का मत है कि मूल्य किसी एक व्यक्ति के मस्तिष्क की उपज न होकर सम्पूर्ण समूह की मनोवृत्ति को स्पष्ट करती है, इसलिए इन्हें सामूहिक प्रतिनिधित्व माने जाते हैं। **परेटो** का मत है कि मूल्यों का सम्बन्ध हमारे जीवन के अतार्किक पक्षों से होने के बाउजूद भी सामाजिक

अस्तित्व के लिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं। यह सच है कि एक समाज में लोग विभिन्न सामाजिक घटनाओं और परिस्थितियों के प्रति जो दृष्टिकोण अपनाते हैं, उनका निर्धारण उस समाज के मूल्यों के अनुसार होता है। सामाजिक मूल्य सामाजिक संतुलन को बनाये रखने, मानव व्यवहरों को निर्देशित करने तथा संस्कृति को एक पीढी से दूसरी पीढी में संचरण करने एवं सामाजिक मूल्यों में एकता, संगठन व नियंत्रण बनाये रखने में मूल्यों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

References

1. Davis, Kingsley : Human Society, Macmillian, New York 1949.
2. Woods, S.F.J : Introductory sociology, Harper, New York 1954.
3. Kimball Young: Systematic Sociology, Part I
4. Burton Wright and others : Perspective an Introduction to Sociology.
5. M. Haralambos: Sociology – Themes and Perspectives.
6. MacIver, R.M. & Page C.H. : Society, Reinhart, New York 1937.
7. Gillin & Gillin: Cultural Sociology.
8. Merrill & Eldredge : Culture & Society.
9. Sumner, W.G. : Folkways, Ginn, Boston, 1606.
10. Scott, William P. : Dictionary of Sociology, Delhi, Goyal saab, 1988.
11. Green A.W: Sociology – An Analysis of Life in Modern Society , McGraw-Hill Co. New York 1964.
12. Bogardus : Sociology.
13. Lundberg, G.A. : Sociology, Harper, New York 1954.
14. Ginsberg : The Psychology of Society.
15. Ross , A.M. : The Study of Human Relation.
16. George Gurvitch : The Sociology of Law.
17. Johanson, H.M.: Sociology: A Systematic Introductory, New Delhi, Allied Publishers Pvt. Ltd. 1983.
18. R.K.Mukerjee in B. Singh's : The Forntiers of Social Science.
19. H. Fitcher : Sociology, Chicago, The University of Chicago Press, 1957.
20. Singhi & Goswami : Samajshastra Vivechan, Rajasthan Hindi Granth Acadmic, 1998.
21. J.P.Singh : Sociology - Concepts and Theories, Printice Hall of India Private Ltd. 1999.
22. M.L. Gupta & D.D. Sharma : Introduction of Sociology, Sahitya Bhawan Publication, Agra , 2011.
23. G.K. Agrwal : Principles of Sociology, Sahitya Bhawan Publication & Distributors (P) Ltd. Agra 2000.
24. G.K. Agrawal : Basic Sociological Concepts, SBPD, Agra, 2011-2012.